

CPC, 1908

PART 07

सिविल प्रक्रिया संहिता

**The Code of
Civil Procedure**

Section 9-10

Res Subjudice



#Judiciary

By Poonam Sha



WELCOME **UMMEED** **CLASSES**

**Like Video and Subscribe
our channel**

Join us:



9269100222



UMMEED CLASSES



#Hinglish

By Poonam Ma'am

Section 9: Courts to try all civil suits unless barred

जब तक कि वर्जित न हो, न्यायालय सभी सिविल वादों का विचारण करेंगे

The Courts shall (subject to the provisions herein contained) have jurisdiction to try all suits of a civil nature excepting suits of which their cognizance is either expressly or impliedly barred.

न्यायालयों को (इसमें अन्तर्विष्ट उपबन्धों के अधीन रहते हुए) उन वादों के सिवाय, जिनका उनके द्वारा संज्ञान अभिव्यक्त या विवक्षित रूप से वर्जित है, सिविल प्रकृति के सभी वादों के विचारण की अधिकारिता होगी।

Section 9

✓ **Explanation I**--A suit in which the right to property or to an office is contested is a suit of a civil nature, notwithstanding that such right may depend entirely on the decision of questions as to religious rites or ceremonies.

Explanation II -For the purposes of this section, it is immaterial whether or not any fees are attached to the office referred to in Explanation I or whether or not such office is attached to a particular place.

① **स्पष्टीकरण 1**- वह वाद, जिसमें सम्पत्ति सम्बन्धी या पद-सम्बन्धी अधिकार प्रतिवादित है, इस बात के होते हुए भी कि ऐसा अधिकार धार्मिक कृत्यों या कर्मों सम्बन्धी प्रश्नों के विनिश्चय पर पूर्ण रूप से अवलम्बित है, सिविल प्रकृति का वाद है।

स्पष्टीकरण 2 - इस धारा के प्रयोजनों के लिए यह बात तात्त्विक नहीं है कि स्पष्टीकरण 1 में निर्दिष्ट पद के लिए कोई फीस है या नहीं अथवा ऐसा पर किसी विशिष्ट स्थान से जुड़ा है या नहीं।]

Q-9 2 Explanation.

civil court



try

all civil suits

unless expressly
impliedly barred.

Party

Cause of cause.

Section 10: Stay of Suit वाद का रोक दिया जाना

Res Subjudice

No Court shall proceed with the trial of any suit in which the matter in issue is also directly and substantially in issue in a previously instituted suit between the same parties, or between parties under whom they or any of them claim litigating under the same title where such suit is pending in the same or any other Court in [India] have jurisdiction to grant the relief claimed, or in any Court beyond the limits of [India] established or continued by [the Central Government * * *] and having like jurisdiction, or before [the Supreme Court].

पक्षकारों के बीच के, जिनसे (व्युत्पन्न अधिकार के अधीन वे या उनमें से कोई दावा करते हैं, किसी पूर्वतन संस्थित वाद में भी प्रत्यक्षतः और सारतः विवाद है, आगे कार्यवाही नहीं करेगा जहां ऐसा वाद उसी न्यायालय में या भारत में के किसी अन्य ऐसे न्यायालय में, जो दावा किया गया अनुतोष देने की अधिकारिता रखता है या भारत की सीमाओं के परे वाले किसी ऐसे न्यायालय में, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा स्थापित किया गया है या चालू रखा गया है और वैसी ही अधिकारिता रखता है, या उच्चतम न्यायालय के समक्ष लम्बित है।

वादों की वादुलपत्ता।

Section 10: Stay of Suit वाद का रोक दिया जाना

Explanation.-- The pendency of a suit in a foreign Court does not preclude the Courts in India from trying a suit founded on the same cause of action.

स्पष्टीकरण - विदेशी न्यायालय में किसी वाद का लम्बित होना उसी वाद-हेतुक पर आधारित किसी वाद का विचारण करने से भारत में के न्यायालयों को प्रवारित नहीं करता।

India
pending

Foreign
↓

preclude
same

of action

Suit

matter → issue

court
↓

stay of ~~stay~~

pending suit

→ same parties

title

Cause of action.

Exception → Foreign.

Part-1 Suits in general. [9-35B]

- 1) Jurisdⁿ of Court & Res judicata. (9-14) ✓
न्यायालय की अधिकारिता और पूर्व-न्याय
- 2) Place of suing वाद करने का स्थान (15-25) =
- 3) Institution of suit वाद संस्थित किया जाना (26)
- 4) Summon & Discovery समन और प्रकटीकरण (27-32)
- 5) Judgment and decree निर्णय तथा डिक्लि (33)
- 6) Interest व्याज (34)
- 7) Costs खर्चे (35-35B)



**UMMEED
CLASSES**

THANKING YOU

FOR

WATCHING

UMMEED CLASSES



9269100222



UMMEED CLASSES



UMMEED_CLASSESOOI

